

## भारत बना दुनिया का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक

### प्रलम्बिस के लयि:

गन्ना, पेट्रोल के साथ इथेनॉल सममशिरण (EBP) कार्यक्रम, उचति और लाभकारी मूल्य (FRP), कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (CACP), रंगराजन समति (2012), जैव ईधन नीति 2018.

### मेन्स के लयि:

भारत की अर्थव्यवस्था पर चीनी उत्पादन का प्रभाव

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत 5000 लाख मीटरकि टन (LMT) से अधिक गन्ने के रिकॉर्ड उत्पादन के कारण **चीनी** के क्षेत्र में **सबसे बड़े उत्पादक एवं उपभोक्ता** और दुनिया के दूसरे सबसे बड़े निर्यातक के रूप में उभरा है।

## चीनी के अच्छे उत्पादन के कारण:

- **चीनी का शानदार सीजन (सतिंबर-अक्टूबर):** सीजन के दौरान गन्ना उत्पादन, चीनी उत्पादन, चीनी निर्यात, गन्ना खरीद, गन्ना बकाया भुगतान और इथेनॉल उत्पादन के सभी रिकॉर्ड बनाए गए।
- **उच्च निर्यात:** निर्यात बना किसी वित्तीय सहायता के लगभग 109.8 LMT के साथ सबसे अधिक था और इसने लगभग 40,000 करोड़ रुपए की वदेशी मुद्रा अर्जति की।
- **भारत सरकार की नीतितगत पहल:** वगित 5 वर्षों में सरकार द्वारा समय पर की गई पहल के चलते गन्ना उत्पादन वर्ष 2018-19 के वित्तीय संकट से बाहर निकलकर वर्ष 2021-22 में आत्मनिर्भरता के स्तर पर पहुँचा दिया है।
- **इथेनॉल उत्पादन को प्रोत्साहन:** सरकार ने चीनी मलियों को चीनी को **इथेनॉल** में बदलने और अधिशेष चीनी का निर्यात करने के लिये प्रोत्साहित किया है ताकि मलियों के परिचालन जारी रखने के लिये उनकी बेहतर वित्तीय स्थिति हो।
  - इसके अलावा तेज़ी से भुगतान, कम कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं और मलियों में अतिरिक्त चीनी की कमी के कारण कम नकदी ब्लॉक के कारण चीनी मलियों की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है।
- **जैव ईधन पर राष्ट्रीय नीति 2018,** वर्ष 2025 तक EBP कार्यक्रम के तहत 20% इथेनॉल मशिरण का एक सांकेतिक लक्ष्य प्रदान करती है।
- **उचति और लाभकारी मूल्य (Fair and remunerative price-FRP):** FRP वह न्यूनतम मूल्य है जो चीनी मलियों को गन्ना किसानों को गन्ने की खरीद के लिये चुकानी पड़ती है। यह **कृषि लागत और मूल्य आयोग (Commission for Agricultural Costs and Prices-CACP)** की सफारिशों के आधार पर तथा राज्य सरकारों एवं अन्य हतिधारकों के परामर्श के बाद निर्धारित किया जाता है।
- **राज्य की सलाह का महत्त्व:** हालाँकि केंद्र सरकार FRP तय करती है, राज्य सरकारें एक राज्य सलाहकारी मूल्य भी निर्धारित कर सकती हैं जो चीनी मलि को किसानों को चुकानी पड़ती है।
- चीनी उद्योग के नियमन पर सफारिशें देने के लिये **रंगराजन समति (2012)** का गठन किया गया था।
- **रंगराजन समति की सफारिशें:**
  - चीनी के निर्यात और आयात पर मात्रात्मक नियंत्रण को समाप्त करने के लिये इन्हें उचति टैरिफ द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिये।
  - उप-उत्पादों की बिक्री पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिये और कीमतें बाज़ार निर्धारित होनी चाहिये।
  - मलियों को खोई से उत्पन्न वदियुत का उपयोग करने की अनुमति देने के लिये राज्यों को नीतितगत सुधार भी करने चाहिये।

## भारत में चीनी उद्योग की वर्तमान स्थिति:

- **परचिय:** चीनी उद्योग एक महत्त्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग है जो लगभग **50 मिलियन गन्ना किसानों** और चीनी मलियों में सीधे कार्यरत लगभग **5 लाख श्रमिकों की ग्रामीण आजीविका** को प्रभावित करता है।
  - चीनी उद्योग कपास के बाद भारत में दूसरा सबसे बड़ा कृषि आधारित उद्योग है।
- **गन्ने की वृद्धि के लिये भौगोलिक स्थितियाँ:**

- तापमान: गर्म और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27 °C के मध्य।
- वर्षा: लगभग 75-100 सेमी।
- मृदा का प्रकार: गहरी समृद्ध दोमट मृदा।
- शीर्ष गन्ना उत्पादक राज्य: महाराष्ट्र > उत्तर प्रदेश > कर्नाटक।
- वितरण: चीनी उद्योग मोटे तौर पर उत्पादन के दो प्रमुख क्षेत्रों- उत्तर में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब तथा दक्षिण में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश में स्थापित हैं।
  - दक्षिण भारत में उष्णकटिबंधीय जलवायु है जो उत्तर भारत की तुलना में प्रतड़िकाई क्षेत्र में अधिक उपज देने के साथ उच्च सुक्रोज के लिये उपयुक्त है।
- चुनौतियाँ:
  - अनश्चित उत्पादन नरिगत: गन्ने को कई अन्य खाद्य और नकदी फसलों, जैसे- कपास, तलहन, चावल इत्यादि से प्रतसिपर्द्धा करनी पड़ती है। इससे मल्लों को गन्ने की आपूर्त प्रभावित होती है और चीनी का उत्पादन भी साल-दर-साल बदलता रहता है जिससे कीमतों में उतार-चढ़ाव होता है। कम कीमतों के कारण अतरिकित उत्पादन के समय में चीनी मल्लों को नुकसान उठाना पड़ता है।
  - गन्ने की कम उपज: दुनिया के कुछ प्रमुख गन्ना उत्पादक देशों की तुलना में भारत में प्रतड़िकाई क्षेत्र उपज बेहद कम है। उदाहरण के लिये जावा में 90 टन प्रतड़िकाई क्षेत्र और हवाई में 121 टन प्रतड़िकाई क्षेत्र की तुलना में भारत की उपज केवल 64.5 टन/ हेक्टेयर है।
  - लघु पैराई अवधि: चीनी उत्पादन एक मौसमी उद्योग है जिसमें एक वर्ष में सामान्य रूप से 4 से 7 महीने की छोटी पैराई अवधि होती है।
  - यह श्रमकों के वृत्तीय नुकसान और मौसमी रोजगार के साथ चीनी मल्लों के पूरण उपयोग न होने का कारण बनता है।
  - चीनी की कम रकिवरी दर: भारत में गन्ने से चीनी की औसत रकिवरी दर 10% से कम है जो अन्य प्रमुख चीनी उत्पादक देशों की तुलना में काफी कम है।
  - उत्पादन की उच्च लागत: गन्ने की उच्च लागत, अकुशल तकनीक, उत्पादन की अनौपचारिक प्रक्रिया और भारी उत्पाद शुल्क के कारण वनिरिमाण की लागत बढ़ जाती है।
  - भारत में अधिकांश चीनी मल्ल छोटे आकार की हैं जिनकी पैराई क्षमता 1,000 से 1,500 टन प्रतदिनि है जिससे यह उचित लाभ उठाने में वफिल रहती हैं।

## आगे की राह

- गन्ना क्षेत्रों के मानचित्रण के लिये सुदूर संवेदन प्रौद्योगकियों को अपनाने की आवश्यकता है।
  - भारत में जल, खाद्य और ऊर्जा क्षेत्रों में गन्ने के महत्त्व के बावजूद हाल के वर्षों और समय अवधि में गन्ने का कोई वशिवसनीय मैप उपलब्ध नहीं है।
- गन्ने में अनुसंधान और विकास कम उपज एवं कम चीनी पुनर्प्राप्त दर जैसे मुद्दों को हल करने में मदद कर सकता है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. जैव ईंधन पर भारत की राष्ट्रीय नीतिके अनुसार, जैव ईंधन के उत्पादन के लिये नमिनलखिति में से कनिका उपयोग कच्चे माल के रूप में कथिया जा सकता है? (2020)

1. कसावा
2. क्षतगिरस्त गेहूँ के दाने
3. मूँगफली के बीज
4. चने की दाल
5. सड़े हुए आलू
6. मीठे चुकंदर

नमिनलखिति कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1, 2, 5 और 6
- (b) केवल 1, 3, 4 और 6
- (c) केवल 2, 3, 4 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4, 5 और 6

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति, 2018 क्षतगिरस्त खाद्यान्न जो मानव उपभोग के लिये अनुपयुक्त हैं जैसे- गेहूँ, टूटे चावल आदि से इथेनॉल के उत्पादन की अनुमति देती है।
- यह नीति राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समतिके अनुमोदन के आधार पर खाद्यान्न की अधशेष मात्रा को इथेनॉल में परिवर्तित करने की भी अनुमति देती है।
- यह नीति इथेनॉल उत्पादन में प्रयोग होने वाले तथा मानव उपभोग के लिये अनुपयुक्त पदार्थ जैसे- गन्ने का रस, चीनी युक्त सामग्री- चुकंदर, मीठा

चारा, स्टार्च युक्त सामग्री तथा मकई, कसावा, गेहूँ, टूटे चावल, सड़े हुए आलू के उपयोग की अनुमति देकर इथेनॉल उत्पादन हेतु कच्चे माल के दायरे का वसतिार करती है। अतः 1, 2, 5 और 6 सही हैं।

अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-becomes-the-world-s-largest-producer-of-sugar>

